लिंग अंकन : हिंदी संज्ञा के सन्दर्भ में

(Gender Marking: With Reference to Hindi Noun)

Dr. Harshalata Petkar, Bilkish Bano,

Assistant Professor, Research Scholar

Centre for Information and Language Engineering

Mahatma Gandhi Antarrastriya Hindi Vishwavidhyalaya Wardha, Maharashtra India

सारांश: हिंदी में कोई भी शब्द जिसका कोई अर्थ हो वह संज्ञा है और संज्ञा का अपने में ही कोई न कोई लिंग जरुर होता है। क्योंकि हिंदी में दो प्रकार के ही लिंग होते है तो जो निर्जीव वस्तुएं है उनका लिंग निर्धारण करने में काफी समस्या आती है और कभी-कभी ऐसा होता है कि किसी शब्द की पर्यायवाची कहीं पर स्त्रीलिंग का बोध कराते हैं तो कहीं पर पुल्लिंग का जैसे- शरीर (उसका शरीर बुखार से तप रहा था), देह (उसकी देह काफ़ी कमजोर हो गयी), नेत्र (उसका नेत्र लाल हो गया), आँख (उसकी आँख लाल हो गयी)। कुछ हिंदी व्याकरण की पुस्तकों में किसी भी शब्द संज्ञा के लिंग का निर्धारण उसके विषय वस्तु तथा उसकी प्राकृतिक गुणों को ध्यान में रखकर किया जाता है। जैसे कोई चीज़ सुंदर और कोमल है तो वह स्त्रीलिंग में आ जाती है और कोई चीज़ कठोर है तो वह पुल्लिंग में आ जाता है। लिंग किसी भी शब्द या शब्द-निर्माण का एक गुण है। और रूप-विज्ञान शब्दों का अध्ययन है कि वह कैसे बनते हैं, और उसी भाषा में अन्य शब्दों के साथ उनका क्या संबंध है। यह शब्दों की संरचना और उनकी उत्पत्ति, मूल शब्द, उपसर्ग और प्रत्यय का विश्लेषण करता है।

यह शोध पत्र इस बात पर ध्यान केंद्रित करता है कि लिंग कैसे रूपात्मक विश्लेषण का एक भाग है। और इस शोध-पत्र से भाषा और व्याकरण संबंधी लिंग पर प्रमुख शोध की समझ विकषित होगी।

मुख्य शब्द:

लिंग, रूप, रूप-विज्ञान, व्याकरण

I. परिचय

किसी भी भाषा में व्याकरण महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हमें भाषा का विशिष्ट ज्ञान देता है ताकि हम उस भाषा का उपयोग प्रभावी तरीके से कर सकें। किसी भी भाषा को सही से उपयोग करने में यह हमें सहायता प्रदान करता है। व्याकरण के नियम शिक्षार्थियों को तार्किक और स्पष्ट रूप से सोचने में मदद करता है ताकि वह उन नियमों का उपयोग करें और भाषा का उपयोग करते समय उनसे कोई गलतियाँ ना हो।

व्याकरणिक लिंग संज्ञाओं को अलग अलग करने के लिए प्रयोग किया जाता है। यह वाक्य को व्यवस्थित करने में मदद करता है। और किसी व्यक्ति से उनके संबंध क्या हैं।, वह किससे समबंधित हैं। या वह वाक्य किसके लिए उपयोग किया जा रहा है उनका लिंग क्या है? इन सब को वर्गीकृत करने का काम करता है।

भाषा में व्याकरणिक लिंग ज्यादातर दो या तीन होते हैं। जिसमें स्त्रीलिंग, पुल्लिंग तथा नपुंसक लिंग है। लेकिन हिंदी में केवल दो प्रकार के ही लिंग होते हैं। इसलिए इसमें निर्जीव वस्तुओं का लिंग निर्धारण करने में काफ़ी समस्या आती है।

लिंग एक जटिल शब्दिक वाक्य विन्यास (complex lexical-syntactic) गुण है जो की संज्ञा शब्द के रूपों को चिन्हित करता है यह रुपमिक विश्लेषण का एक भाग है जो शब्दों के अन्य गुणों का विश्लेषण करता है की वह कहा पर किस चीज़ के लिए उपयोग किया जा रहा है और उनके रूप में क्या परिवर्तन हो रहा है।

Table 1: Bottom up approach

Object of study	Name of field	Size of unit Language use
	Pragmatics	Largest
Meaning	Semantics	
Sentences, clauses	Syntax	
Words, forms	Morphology	
Classified sounds	Phonoloy	
All human sounds	Phonetics	Smallest

किसी भी भाषा का आधार ध्वनि होता है। Phonetics के अंतर्गत मानव द्वारा उच्चारित ध्वनियों को अध्ययन किया जाता है जबकि Phonology के अंतर्गत किसी विशेष भाषा या भाषाओँ के प्रणाली के ध्वनियों का अध्ययन किया जाता है।

किसी भी वाक्य को बनाने के लिए शब्द तथा उसके मूल रूप के बारे में जानना काफ़ी महत्वपूर्ण है भाषाविज्ञान के इस चरण में शब्दों के मूल रूप, उपसर्ग, प्रत्यय का अध्ययन किया जाता है।

भाषाविज्ञान के अगले चरण में वाक्य-विज्ञान आता है जिसके अंतर्गत वाक्य निर्माण किया जाता है।

अर्थविज्ञान के अंतर्गत वाक्यों के अर्थ का अध्ययन किया जाता है।

संकेत विज्ञान के अंतर्गत भाषा का वैह्वारिक उपयोग का बारे में आध्ययन किया जाता है।

II. **साहित्यिक पुनरवलोकन :**

किरा हॉल (2002) में "Gender across languages" किताब में "Unnatural" लिंग के बारे में बताया। यह अध्याय "प्राकृतिक लिंग" की पारंपरिक भाषा की समझ पर सवाल उठाता है। इसमें इन्होने लिंग अग्रीमेंट (Masculine agreement, Feminine agreement) के बारे में बताया है कि किसी भी वाक्य की क्रिया और विशेषण उसके कर्ता के लिंग पर निर्भर करता है। और साथ ही साथ हिजडा समाज के लोग किस प्रकार से भाषा में लिंग का प्रयोग करते हैं उसके बारें में भी बताया है।

Qaisar khan *et.al.* (2014) में अपने शोध पत्र **"Role of Language in Gender Identity Formation in Pakistani School Textbooks"** भाषा और भाषाविज्ञान के अंतर्गत लिंग के विशेषता को बताया है। इसमें बताया गया है कि कोई भी भाषा संस्कृति को दर्शाता है। यह लेख किसी भी समाजिक एवं सांकृतिक में लिंग के महत्व को दर्शाता है और किसी भी भाषा में लिंग पहचान के निर्माण को शाब्दिक स्तर पर बताया है जिसमें कक्षा 1-10 उर्दू, अंग्रेजी एवं पख्तू के 42 पाठ्यपुस्तको का विश्लेषण कर लिंग की पहचान की बात कही गयी है। इसमें परम्परा से चली आ रही जो सोच है उसके हिसाब से लिंग को बताया गया है कि जो चीज़े मजबूत एवं बलसाली है वह पुल्लिंग है। और जो चीज़े नाजुक, कोमल एवं कमजोर है वह स्त्रीलिंग है।

Muller *et. al.* (2015) में "हैंडबुक ऑफ़ वर्ड-फॉर्मेशन" के लेख में लिंग-अंकन के सैद्धांतिक समस्याओं को प्रस्तुत किया है और साथ-साथ भाषा की आंतरिक संरचना को बताया है। लिंग-अंकन के अंतर्गत इन्होंने क्रमशः समस्याओं की परिभाषा, व्युत्पत्ति, स्त्रीलिंग अंकन में समस्या तथा विकास पर प्रकाश डाला है।

स्वेता सिन्हा (2017) में अपने शोध पत्र "**Gender Reflection in Number Markers: A Case of Hindi Disyllabic Words and their Gendered Behavior**" में लिंग(Gender) एवं लिंग(Sex) के बारे में बताया है कि "Sex is the biological characteristic of human and animals. All the living organisms have distinct sexual classification of male and female. The concept of gender is much more complex than this because the culture has a lot of impact on gender assignment to almost all possible living/ non- living things under the sky."

और साथ ही साथ हिंदी में क्रिया विशेषण अग्रीमेंट के बारे में बताया है।

Jaralvilai Charoonrojn ने अपने शोध पत्र "**Sex and Gender in Hindi** " में लिंग(Gender) एवं लिंग(Sex) के अवधारण को समझाया है। उन्होंने बताया है की " Sex is the biological characteristic of human and animals. Almost all animate living beings in the world are categorized to be either male or female. In some context, as mentioned above, gender and sex are the same, but in another context, they just correlate. Gender seems more difficult to understand. The word is also used as a technical term in grammar. Some languages have gender, and some do not. Hindi, French, Spanish, etc. have two genders, while Sanskrit, Pali,

German, Romanian, etc. have three genders. Languages which do not have gender are Thai, Cambodian, Chinese, Indonesian, etc."

Jos J.A. van Berkum (1996) में अपनी किताब "**The psycholinguistics of grammatical gender**" में व्याकरणिक लिंग के मनो-भाषावैज्ञानिक पक्ष को बताया है। इन्होने लिंग के अवधारणा को अग्रीमेंट के हिसाब से बताया है। इन्होने डच भाषा में लिंग के अवधारणा के बारे में बताया है।

Elena Andonova *et al* (2007) ने अपने शोध-पत्र "Second Language Gender System Affects First Language Gender Classification" में इन्होने ने यह बताया है कि कैसे भाषा सिखने में दूसरी भाषा की लिंग व्यवस्था पहले वाले भाषा की लिंग व्यवस्था को प्रभावित करती है। इन्होने व्याकरणिक लिंग के बारे में बताया है कि "Grammatical gender is widely assumed to be a prime example of arbitrariness due to the fact that there is ample cross-linguistic variability in the genders of nouns referring to one and the same concept and little systematicity in the mapping between different gender categories (e.g., masculine, feminine, and neuter) and the meaning of nouns within languages."

III. **लिंग की अवधारणा :**

लिंग एक सामाजिक राजनीतिक और मनोवैज्ञानिक अवधारणा है। भाषाविदों के मतों में- जैसे डॉ. चाटुर्ज्या (1957) इसे प्राकृतिक से व्याकरणिक की ओर विकसित मानते हैं। लिंग विधान भारतीय भाषाओं में दूसरी भाषाओं की अपेक्षा बाद में विकसित हुआ। ज्यूल ब्लाख का मानना है कि आधुनिक भारतीय भाषाओं में संस्कृत के लिंगों का अनुसरण नहीं किया गया है। 18वीं व 19वीं सदी में भारोपीय भाषाओं में लिंग के विषय पर अधिक ध्यान दिया जाने लगा।

IV. **शब्द-निर्माण (रुप-विज्ञान) (Word formation-morphology)**

भाषा विज्ञान के अंतर्गत शब्द-निर्माण दो चीजों से समबंधित है –

· रूप-निर्माण या शब्द-निर्माण वह प्रक्रिया है जिससे शब्द बदलते है या 'शब्द' को 'पद' में बदलने की प्रक्रिया (रूप –विज्ञान) है।

· या किसी भी भाषा के लिए शब्दावली का निर्माण करना।

शब्द-निर्माण दो प्रकार से किये जाते हैं

1- **व्युत्पादक (Derivational)** रूपिम या शब्द में व्युत्पादक रूपिमों (उपसर्ग, प्रत्यय) को जोड़कर नए शब्द बनाने की प्रक्रिया को किया जाता है। इसमें व्युत्पादक प्रत्यय लगने के बाद बना शब्द स्वतंत्र शब्द की भाँति भाषा में प्रयुक्त हो सकता हैं। जैसे –

सुंदर (विशेषण) + ई = सुंदरी (संज्ञा)
अ + सुंदर = असुंदर
लड़का (संज्ञा) + पन = लड़कपन (भाववाचक संज्ञा)

governor, government, governable, misgovern, ex-governor, and ungovernable.
unhappy and happiness

2- **रूपसाधन (Inflection)** – शब्द या रूपिमों को व्याकरणिक कोटियों (grammatical categories such as tense, case, voice, aspect, person, number, gender, mood.) जैसे – काल, विभक्ति, लिंग, वाच्य, वचन , कारक के आधार पर निर्माण करते हैं। रूपसाधक प्रत्यय लगकर बना शब्द स्वतंत्र शब्द की भाँति प्रयुक्त नहीं हो सकता है। जैसे लड़की + याँ = लड़कियाँ, भाषा + एँ = भाषाएँ। रुपसाधक प्रत्यय लगाकर हम किसी शब्द को वाक्य में प्रयोग होने के योग्य बनाते हैं। जैसे- "लड़का" शब्द में रुपसाधक प्रत्यय लगाकर उसके विभिन्न रूप प्राप्त कर सकते हैं – "लड़का जाता है।", "लडकों को बुलाओ।","लडके जाते हैं।","लड़को इधर आओ। " इन सभी वाक्यों में लड़का, लड़को, लडकों, लड़के आदि का मूल शब्द तो "लड़का" ही है। लेकिन इनके रूपों में बदलाव आ गया। इस प्रकार रुपसाधक प्रत्यय लगाने से किसी शब्द का मूल रूप नही बदलता केवल उसका वाह्य रूप ही बदलता है।

V. **हिंदी संज्ञा में रूपसाधक (Inflection in Hindi Nouns)**

हिंदी रूपवैज्ञानिक दृष्टि से समृद्ध भाषा है। मूल शब्द के अलावा, हमें शब्द रूपों से संबंधित रूपात्मक जानकारी प्राप्त करने की आवश्यकता है जिससे किसी भी शब्द के रूपमिक गुणों को जानने से उसको वर्गीकृत करना आसान हो जाता है। दी रुपसाधक संज्ञा वचन (एक-वचन, बहुवचन), लिंग (स्त्रीलिंग, पुल्लिंग), और (nominative vs. oblique) फॉर्म पर निर्भर करता है। सभी हिंदी संज्ञाओं (animate, inanimate or abstract) का लिंग होता है।

हिंदी संज्ञा केवल कारक एवं वचन के रूपात्मक अंकन (morphological marking) को दिखाता है। वचन या तो एकवचन हो सकते है या बहुवचन। हिंदी में कारक या तो direct या फिर oblique हो सकते हैं। direct case जैसे – "लड़का" तथा oblique case जैसे – लड़के (लड़का+ए (oblique)। कुछ पुल्लिंग संज्ञाएँ आ (the masculine morpheme) से समाप्त होती हैं, और कुछ स्त्रीवाचक एक वचन कर्ता संज्ञा (the feminine morpheme) ई से समाप्त होते हैं। इसके कुछ उदहारण निचे दिए गये टेबल में दिए गये है –

Morphology of Hindi nouns that end with gender inflection

	पुल्लिंग (pullng)		स्त्रीलिंग (strilng)	
	nominative	Oblique	nominative	oblique
singular	लड़का (laRk-A)	लड़के (Lark-E)	लड़की (laRk-I)	लड़की (laRk-I)
plural	लड़के (Lark-E)	लड़को (larkON)	लडकियाँ (laRkI-AN)	लडकियों (laRkI-ON)

Table 1.2

Morphology of Hindi nouns that end with gender inflection

	पुल्लिंग (pullng)		स्त्रीलिंग (strilng)	
	nominative	Oblique	nominative	oblique
singular	बुरा (bura)	बुरे (bure)	बुरी (buri)	बुरी (buri)
plural	बुरे (bure)	बुरे (bure)	बुरे (bure)	बुरे (bure)

Table 1.3

उपर्युक्त टेबल से यह पता चलता है कि हिंदी में कर्ता संज्ञा के लिंग पर विशेषण तथा क्रिया का रूप भी निर्भर करता है- कुछ हिंदी क्रियाओं के रूपसाधक की सूची इस प्रकार है –

List of Inflections of Hindi feminine noun:"ई"- बड़ा-बड़ी, भला-भली आदि।, "इनी"-योगी-योगिनी, कमल-कमलिनी आदि। "इन" - धोबी-धोबिन, तेल-तेली आदि। "नि"- मोर-मोरनी, चोर-चोरनी आदि। , "आनी"- जेठ-जेठानी, देवर-देवरानी आदि।, "आइन"- ठाकुर-ठकुराइन, पंडित-पण्डिताइन आदि। "इया" - बेटा-बिटिया, लोटा-लुटिया आदि। संस्कृत के अकारांत शब्दों में आ लगा देने से वह स्त्रीलिंग हो जाते हैं।

उदाहरण -

तनुज + आ = तनुजा, चंचल + आ = चंचला, आत्मज + आ = आत्मजा, सुत +आ = सुता, प्रिय + आ = प्रिया

list of Infections of hindi Masculine noun; "अ"- खेल, रेल, बाग, हार, यंत्र आदि।, "आ"- लोटा, मोटा, गोटा, घोड़ा, हीरा आदि।, "आव"- पुलाव, दुराव, बहाव, फैलाव, झुकाव आदि।, "पा"- बुढापा, मोटापा, पजापा आदि।, "पन"- लड़कपन, अपनापन, बचपन, सीधापन आदि।, "क" - लेखक, गायक, बालक, नायक आदि।, "त्व"- ममत्व, पुरुषत्व, स्त्रीत्व, मनुष्यत्व आदि।, "आवा"- भुलावा, छलावा, दिखावा चढ़ावा आदि।, "औड़ा"-पकौड़ा, हथौड़ा आदि।

Rule of making Feminine from Masuline and vice a versa -

1. अ या आ पुलिंग शब्दों को 'ई' कर देने से वे स्त्रीलिंग हो जाते है। उदाहरण - गूँगा = गूँगी

2. जब अ, आ, वा आदि पुल्लिंग शब्दों को स्त्रीलिंग में बदला जाता है, तो अ, आ, तथा वा की जगह पर 'इया' लगा दिया जाता है। जैसे - बेटा = बिटिया।

3 - अक जैसे तत्सम शब्दों में 'इका' जोडकर भी स्त्रीलिंग बनाए जाते हैं।

उदाहरण - अध्यापक + इका = अध्यापिका, पत्र + इका = पत्रिका, चालक + इका = चालिका।

4 - जब पुल्लिंग को स्त्रीलिंग बनाया जाता है, तो कभी-कभी नर या मादा लगाना पड़ता है ।

उदाहरण -तोता = मादा तोता, खरगोश = मादा खरगोश, मच्छर = मादा मच्छर, जिराफ = मादा जिराफ, खटमल = मादा खटमल, मगरमच्छ = मादा मगरमच्छ।

5 - कुछ शब्द स्वतंत्र रूप से स्त्री-पुरुष के स्वंय में ही जोड़े होते हैं। कुछ पुल्लिंग शब्दों के स्त्रीलिंग बिलकुल उल्टे होते हैं।
उदाहरण - राजा = रानी, सम्राट = सम्राज्ञी, पिता = माता, भाई = बहन, वर = वधू, पति = पत्नी।
6 - कुछ शब्दों का स्त्रीलिंग न हो पाने की वजह से उनमें 'आनी' प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग बनाया जाता है।
उदाहरण -ठाकुर + आनी = ठकुरानी, सेठ + आनी = सेठानी, चौधरी + आनी = चौधरानी, देवर +आनी = देवरानी।
7 - कभी-कभी पुल्लिंग के कुछ शब्दों में 'इन' जोडकर स्त्रीलिंग बनाया जाता है।
उदाहरण - साँप + इन = सांपिन, सुनार + इन = सुनारिन, नाती + इन = नातिन।
8 - कभी-कभी बहुत से शब्दों में 'आइन' जोडकर स्त्रीलिंग बनाए जाते हैं।
उदाहरण - चौधरी + आइन = चौधराइन, हलवाई + आइन = हलवाइन।
9 - जब पुल्लिंग शब्दों में ता की जगह पर 'त्री, लगा दिया जाता है, तो वह स्त्रीलिंग बन जाते हैं।
उदाहरण - नेता = नेत्री, दाता = दात्री, अभिनेता = अभनेत्री, रचयिता = रचयित्री, विधाता = विधात्री, कवि = कवित्री।
10 - संस्कृत के पुल्लिंग शब्दों मान और वान को जब वती और मति में बदल दिया जाता है, तो वह स्त्रीलिंग में बदल जाते हैं।
उदाहरण - बुद्धिमान = बुद्धिमती, पुत्रवान = पुत्रवती, श्रीमान = श्रीमती, भाग्यवान = भाग्यवती, आयुष्मान = आयुष्मती।
इसी प्रकार किसी वाक्य में कर्ता का लिंग पता करना हो तो उसके लिए कुछ नियम बनाये गये हैं जैसे -
यदि वाक्य में क्रिया "इ", "ई", "यी", "गी", "ती", "की", "थी", "नी", "ठी" से समाप्त होती है तो वाक्य
में प्रयुक्त कर्ता (संज्ञा) स्त्रीलिंग होता है और यदि वाक्य में क्रिया "अ", "आ", "या", "गा", "ता",
"का", "था", "ना", "ठा", से समाप्त होती है तो वाक्य में प्रयुक्त कर्ता (संज्ञा) पुल्लिंग होता है।
इसी प्रकार स्त्रीलिंग से पुल्लिंग में बदलने के लिए स्त्रीलिंग प्रत्यय को हटा दिया जाता है। लिंग पहचान में जब तक किसी संज्ञा के लिए सर्वनाम का प्रयोग नही किया जाता है तब तक उस संज्ञा का लिंग ज्ञात नही हो पाता है।

VI. <u>क्रिया का लिंग, वचन, संज्ञा) कर्ता (से संबंध</u> :

क्रिया का लिंग और वचन सामान्यत :कर्ता और कर्म के लिंग और वचन के अनुसार निर्धारित होता है। वाक्य में कर्ता और कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार जब क्रिया के लिंग, वचन आदि में परिवर्तन होता है तो उसे अन्विति कहते हैं। क्रिया के लिंग, वचन में परिवर्तन तभी होता है जब कर्ता या कर्म परसर्ग रहित हो। जैसे – सवार कारतूस माँग रहा था।) कर्ता के कारण (सवार ने कारतूस माँगे।) कर्म के कारण (कर्नल ने वज़ीर अली को नहीं पहचाना।) यहाँ क्रिया, कर्ता और कर्म के भी कारण प्रभावित नहीं है (अत :कर्ता और कर्म के परसर्ग सहित होने पर क्रिया, कर्ता और कर्म में से किसी के भी लिंग और वचन से प्रभावित नहीं होती और वह एकवचन पुल्लिंग में ही प्रयुक्त होती है।

किसी भी वाक्य में संज्ञा (कर्ता) का लिंग निर्धारण क्रिया के आधार पर होता है। क्रिया हमेशा कर्ता के लिंग के अनुसार बदलती है, हालाकि की कभी-कभी ऐसा होता है की क्रिया कर्ता पर आधारित न हो कर कर्म (object) के अनुसार बदलती है।

जैसे- सीता ने रोटी खायी।

मोहन ने रोटी खायी।

राम ने किताब पढ़ी।

लड़के ने किताब पढ़ी।

कुछ उस समय होता है जब क्रिया कर्ता से अनुबंद (agree) न हो कर कर्म (object) से होता है ऐसे स्थिति तब होती है जब क्रिया सकर्मक तथा perfective form में हो

जैसे – लड़के ने किताब पढ़ी।

यहा क्रिया "पढ़ी" सकर्मक क्रिया है और perfective form में है इसलिए यह कर्म (object) "किताब" के अनुसार बदल रही है इसलिए यहा क्रिया स्त्रीलिंग है। जबकि कर्ता "लड़के" पुलिंग है।

इस स्थिति ("जब क्रिया कर्ता से अनुबंद (agree) न हो कर कर्म (object) से होता है ऐसे स्थिति तब होती है जब क्रिया सकर्मक तथा perfective form में हो") **को अर्गेटीविटी (Ergativity)** कहा जाता है।

VII. **निष्कर्ष (conclusion)**

इस शोध-पत्र के अंतर्गत हिंदी भाषा के लिंग-अंकन व्यवस्था के बारे में अध्ययन किया गया है। जिसके अंतर्गत उदाहरण के साथ कुल दस नियमों को बताया गया है। जिसमें स्त्रीलिंग से पुल्लिंग तथा पुल्लिंग से स्त्रीलिंग के बदलाव को बताया गया है। जिसमें सबसे समान्य नियम है की यदि वाक्य ई से समाप्त हो रही है तो लिंग स्त्रीलिंग है और यदि आ से समाप्त हो रहा है तो पुल्लिंग। हालाँकि इसमें कुछ अपवाद भी है - जैसे "आ" से समाप्त होने वाले शब्द "माता", "भाषा". "बुआ" स्त्रीलिंग है। और इसी तरह "ई" से समाप्त होने वाले शब्द जैसे - "भाई", "हाथी", "पक्षी", "फरवरी"। हिंदी में कुछ शब्द ऐसे हैं, जो स्त्रीलिंग और पुल्लिंग दोनों रूपों में प्रयोग किए जाते है। जैसे - राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, चित्रकार, पत्रकार, प्रबंधक, सभापति, वकील, डॉक्टर, सेक्रेटरी, गवर्नर, लेक्चर, प्रोफेसर, बर्फ, मेहमान, शिशु, दोस्त, मित्र आदि।

अतः यह कहा जा सकता है कि भाषाओं के अध्ययन के लिए लिंग का अध्ययन करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। जिनमें से रूपीमिक विश्लेषण, वाक्य विन्यासीय विश्लेषण, अर्थीय विश्लेषण, व्यवहारिक विश्लेषण (संदर्भ आदि का ध्यान रखना), वाक्य की योजना बनाना तथा वाक्य निर्माण में लिंग की काफ़ी बड़ी भूमिका होती है। हिंदी में वाक्य लिखते हुए, विभिन्न शब्दों को जोड़ने में भी लिंग का ध्यान रखना होता है। जैसे कि संज्ञा सर्वनाम के साथ-साथ क्रिया एवं विशेषण भी स्त्रीलिंग या पुल्लिंग होती है। अतः यह कहा जा सकता है की हिंदी में लिंग निर्धारण, व्याकरण का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

नाइडा के अनुसार "रूप विज्ञान रूपिम तथा शब्द-निर्माण में उसकी व्यवस्था का अध्ययन करता है।" (अग्रवाल, 1981)I चुकि रूप विज्ञान का सम्बंध शब्द निर्माण, तथा उनमें होने वाले परिवर्तन तथा विविध व्याकरणिक संरचनाओं में पाई जाने वाली व्यवस्था का अध्ययन है। लिंग एक रूपात्मक अंकन जो कि किसी शब्द को वर्गीकृत करने का काम करता है। जैसे की शब्द निर्माण में हम किसी पुल्लिंग को स्त्रीलिंग बनाने के लिए इसमें कोई न कोई प्रत्यय लगाते हैं। इसी प्रकार से हिंदी के मूल शब्द में ऐसे कई शब्द है जिनमें प्रत्यय जोड़ने से उनके लिंग में परिवर्तन हो जाता है। इसलिए लिंग अंकन रूपसाधक प्रक्रिया के अंतर्गत आता है।

अतः रूपविज्ञान के अंतर्गत पद के विभिन्न भागों - मूल प्रकृति (baseform) तथा उपसर्ग, प्रत्यय, विभक्ति का विश्लेषण किया जाता है। इसलिए लिंग अंकन को रूपात्मक अंकन (Morphological Marker) भी कह सकते है।

VIII. **संदर्भ सूची :**

[1] गुरु. पं कामताप्रसाद और एस. एम. आर. ए. (1984), हिंदी व्याकरण, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

[2] तिवारी, भोलानाथ. (2018), मानक हिंदी का स्वरुप, प्रभात प्रकाशन

[3] रस्तोगी, कविता. (2012), समसामयिक अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान, भारत वाणी

[4] रानी, डॉ. विनीता. (2017) भाषाविज्ञान और हिंदी भाषा, श्री नटराज प्रकाशन

[5] Kothari, C. R. (2004) Research Methodology Methods & Techniques, New Age International Publishers.

[6] Kachru, Yamuna Hindi, John Benjamins Publishing Company.

[7] Hall, kira(2002) "unnatural" gender in Hindi , University of Colorado at Boulder, USA.

[8] Ranjan, Rajiv(2013), Teaching strategies of grammatical gender in L2 Hindi/Urdu , University of lawa.

[9] Charoonrojn jaravilai, Sex and Gender in Hindi.

[10] van Berkum, J.J.A. (1996). The psycholinguistics of grammatical gender: Studies in language comprehension and production. Doctoral Dissertation, Max Planck Institute for Psycholinguistics,Nijmegen University Press (ISBN 90-373-0321-8) Nijmegen, Netherlands.

[11] Britannica, The Editors of Encyclopedia. "*Hindi language*". Encyclopedia Britannica, 28 Nov. 2019, https://www.britannica.com/topic/Hindi-language. Accessed 5 March 2022.

[12] https://hindilanguage.info. Accessed 1 March 2022.

[13] https://writingcenter.unc.edu. Accessed 4 March 2022.

[14] https://www.catalyst.org/research/what-is-gender-a-tool-to-understand-gender-identity. Accessed 5 March 2022.

[15] https://www.frontiersin.org/articles/10.3389/fpsyg.2019.02208/full. Accessed 1 March 2022.